thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 26
सृष्टि संवत् 1960853115
5 अक्तूबर 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-71, अंक : 26, 2/5 अक्तूबर 2014 तदनुसार 20 आश्विन सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु० , वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

विजयादशमी का पर्व

-ले० श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

विजयादशमी का दिन हिन्दुओं का एक पवित्र दिन है क्योंकि इसी शुभ मुहूर्त में मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने विजय यात्रा आरम्भ की थी और कुछ समय में ही लंकापति रावण का वध कर असंख्य प्राणियों को उसके अत्याचारों से मुक्त किया था। राम की यह विजय धर्म की अधर्म पर अपूर्व विजय थी। राम ने रावण का राज्य छीनने के लिए लंका पर चढ़ाई नहीं की थी और न लंका की प्रजा को दास बनाकर उसका दोहन करने के लिए चढ़ाई की थी अपितु आर्य परम्परा के अनुसार अत्याचार के उन्मूलन और धर्म की प्रतिष्ठा के लिए चढ़ाई की थी। उन्होंने अपनी विजय से सच्चे वीर का आदर्श उपस्थित करके क्षत्रिय धर्म की महिमा का भव्य दिग्दर्शन कराया था। मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए अयोध्या या मिथिला से सहायता प्राप्त नहीं की थी। उन्होंने स्वयं अपने बल पर युद्ध किया था। विजयादशमी का पर्व उस दिन का स्मरण कराता है जब आर्य जाति का जाति सुलभ तेज मौजूद था। जब वह अत्याचार के उन्मूलन और पीड़ितों के रक्षण के लिए शक्तिशाली अत्याचारी के मुकाबले में संगठनात्मक प्रतिभा के बल पर जंगली जातियों को ला खड़ा करना जानती थी। भगवान् राम का हम सत्कार करते हैं क्योंकि उन्होंने आर्य जाति की मर्यादा के अनुरूप नेतृत्व और शौर्य प्रदर्शित किया और विश्वास की भावना को गौरवान्वित किया था।

विजयादशमी के दिन यज्ञशाला के द्वार देश में सुसज्जित, सशस्त्र, चतुरंगिणी सेना को खड़ा करके उनकी नीराजना आरती की जाती थी। नीराजना विधि में स्वस्ति और शान्तिवाचन पूर्वक बृहत् होमयज्ञ होता था जिसमें क्षात्रधर्म के वर्णनपरक मन्त्रों से विशेष आहुतियां दी जाती हैं। वैश्यवर्ण या अन्य व्यवसायी भी इसी प्रकार अपने व्यवसाय के वाहन आदि उपकरणों को सुसज्जित और परिमार्जित करके यज्ञ करते थे। राजा लोग विजयादशमी के दिन से अपनी विजय यात्रा का शुभारम्भ करते थे। वैश्य भी अपने वाहनों में बैठकर इसी प्रकार व्यापार यात्रा का प्रारम्भ सूचक अनुष्ठान करते थे। विजयदशमी के दिन से दिग्विजय यात्रा और व्यापार यात्रा निर्बाध चल पड़ती थी। प्राचीन काल में विजयादशमी का शुद्ध स्वरूप इतना ही प्रतीत होता था। समय के साथ-साथ इसमें परिवर्तन होता चला गया। वर्तमान समय में इस पर्व के अवसर पर राम के अभिनय तथा रामलीला के प्रदर्शन का प्रचार चल पड़ा और जिसने विकृत रूप धारण किया।

दीर्घकाल से विजयादशमी के पर्व पर रामलीला के रचे जाने के कारण जनता में यह मिथ्या धारणा बद्धमूल हो गई है कि विजयादशमी के दिन मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने रावण का वध करके लंका पर विजय प्राप्त की थी। वाल्मीकि रामायण के अवलोकन से इस चिरकालीन कल्पना का निराकरण होता है। वाल्मीकि रामायण में यह स्पष्ट लिखा है कि आज के दिन राम ने पम्पापुर से लंका की ओर प्रस्थान किया था और चैत्र मास की अमावस्या को रावण का वध कहा गया है। वाल्मीकि रामायण से यह भी विदित होता है कि वर्षा ऋतु के चार मास पर्यन्त रामचन्द्र का निवास पम्पापुर में ही रहा। वर्षा ऋतु के बीतने पर हनुमान सीता की खोज में गए थे। इससे प्रतीत होता है कि विजयादशमी के दिन रावण का वध नहीं हुआ था। रामचन्द्र जी की विजय तिथि चैत्र कृष्णा अमावस है।

आजकल हमारे पर्व केवल परम्परागत रूप में रह गए हैं। उत्तरी भारत के व्यापक भागों में रामलीला मनाई जाती है। रावण, कुम्भकरण और मेघनाद के विशाल पुतले बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर प्रतिष्ठित किए जाते हैं और विजयादशमी और दशहरे के दिन उन्हें जला दिया जाता है। इन पुतलों को जलाने से अन्याय, अत्याचार और स्वेच्छाचार के प्रतीक तत्वों का नाश नहीं होता। आज देश में ये तत्व अधिकाधिक पनप रहे हैं। इस समय देश में अनेक प्रकार की कुरीतियां फैल रही हैं। देश में भ्रष्टाचार, अन्याय, पक्षपात के दूषण सर्वत्र दिखाई देते हैं। इन कुरीतियों को दूर करने के बजाय हम पुतलों को जलाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। अतः हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम सभी अत्याचारों का संसार से लोप करके विजयादशमी आदि पर्वों के शुद्ध और सनातन स्वरूप को जनता में प्रचारित करें। पर्वों के विषय में जो भ्रान्तियां जन-साधारण में फैल चुकी हैं उन भ्रान्तियों का निराकरण करें। विजयादशमी के पर्व का जो ऐतिहासिक स्वरूप है उस स्वरूप को अपने जीवन के अन्दर अपनाने का प्रयास करें।

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

10. **प्रतिरूपचर्याम्**-स्वाध्यायशील व्यक्ति को प्रज्ञालाभ के अन्तर्गत जहां ब्रह्मण्यता प्राप्त होती है, वहां प्रतिरूपचर्या की भी सिद्धि हो जाती है। जो भी आचरण वह अपनाता है उसमें वह प्रतिमूर्त हो जाता है, उसकी प्रतिकृति बन जाता है, लोगों के लिए मिसाल बन जाता है।

अन्य व्यक्ति अपने आचरण-सुधार के लिए कहीं मिसाल ढूंढना चाहते हैं, तो उस स्वाध्यायशील पड़ोसी में वे गुण साक्षात् मूर्तिमान् नज़र आते हैं। यदि वे चाहते हैं कि हम दयालु बनें, तो उन्हें उस व्यक्ति में दयालुता प्रतिरूप दृष्टिगोचर होती है। यदि वे उदारता अपनाना चाहते हैं, तो वे उस व्यक्ति में प्रत्यक्ष देखते हैं। अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति वह दर्पण है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति हर सद्गुण की प्रतिकृति (छाया) देख सकता है। फिर तो "स-यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।" (गीता ३।२९) जिसे वह अपने आचरण चिन्ह से प्रमाणित कर देता है संसार उसका अनुकरण करने लगता है।

11. **यश**-स्वाध्याय से होने वाले इन दस लाभों के अतिरिक्त ग्यारहवां लाभ यश: प्राप्ति है "यशो भवति।" यह भी प्रज्ञा लाभ का परिणाम है, व्यक्ति की कामनाओं में यश की कामना बड़ी बलवती है यहां तक देखा गया है कि व्यक्ति सब कुछ दांव पर लगाकर नाम की रक्षा करना चाहता है। नाम अमर हो जाए, तन रहे न रहे, धन रहे न रहे। याज्ञवल्क्य कहते हैं, स्वाध्याय से यश की प्राप्ति भी होती है।

शास्त्रकार कहते हैं कि संसार में जिसकी कीर्ति है वही जीवित है-कीर्तिर्यस्य स जीवति-जिसका नाम लोगों की जिह्वा पर संशब्दित है, उनके मुख से मुखरित है, लोगों की जुबान पर विद्यमान है, वह व्यक्ति जीवित है, अमर है।

लेकिन इसके पहले ही किसी की कीर्ति हो, उसका नाम लोगों की जिह्वा पर संशब्दित हो, मुख से मुखरित हो, यह आवश्यक है कि उसका नाम लोगों के हृदय पर छा जाए। नाम का जिह्वा से संशब्दित होना कीर्ति है, और हृदय पर छा जाना व्याप जाना यश है। कीर्ति से पहले यश का लाभ आवश्यक है। यश लाभ के बिना कीर्तिलाभ असम्भव है।

जब तक नाम हृदयों में घर न कर ले, तब तक वह लोकवाणी पर कैसे आ सकता है ? इसीलिए याज्ञवल्क्य कहते हैं कि स्वाध्यायशील व्यक्ति लोगों के दिलों में घर कर लेता है। उसका यश होता है उसका पुण्य गन्ध इतना फैल जाता है कि अनायास ही वह लोक हृदय पर अधिकार कर लेता है। उद्यान में खिले हुए पुष्प की भांति उसका पुण्यगन्ध दिग्दिगन्त में फैल जाता है, अनायास ही लोगों के हृदय पर अधिकार कर लेता है। जैसे व्यक्ति दीर्घ श्वास लेकर पुण्य गन्ध को भी लोग अपने हृदय में भर लेना चाहते हैं, यही उसका यशोलाभ है। इसलिए कहा-यशो भवति उसका यश-विस्तार होता है, पहले उसका आचरण दिलों पर व्याप जाता है, फिर उसका नाम जिह्वा से संशब्दित होता है। परन्तु व्यक्ति इतने लाभ से ही संतुष्ट नहीं रहता, वह कुछ और भी चाहता है।

12. **लोकपक्ति**-प्रज्ञा लाभ के फलस्वरूप 'लोकपक्ति' चौथा लाभ है। इसे हम स्वाध्याय का बारहवां लाभ मान सकते हैं। एषणात्रय में लोकैषणा, अन्तिम एषणा है और कदाचित् व्यक्ति पहली दो एषणाओं, पुत्रैषणा और वित्तैषणा पर विजय पा ले, परन्तु लोकैषणा पर विजय पा सकना अत्यन्त कठिन है। यह एषणा तो बड़े से बड़े महात्माओं में भी देखी जाती है। इससे तो कोई विरला ही अछूता रह सकता है, यद्यपि इससे अलिप्त व्यक्ति को ही सचमुच अल्पित कहा जा सकता है। परन्तु जिसे इसका लाभ ही नहीं हुआ, यदि वह कहे कि मैं अलिप्त हूं तो ऐसा कथन एक विडम्बनामात्र है। इसलिए पहले उसे पाना, पश्चात् उसका छोड़ना ही श्रेयस्कर है। महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि स्वाध्यायशील व्यक्ति की यह एषणा भी स्वभावत: पूर्ण हो जाती है। लोकपक्तिर्भवति-उसका लोक-परिपाक हो जाता है। उसे लोकसिद्धि हस्तगत हो जाती है।

लोकपक्ति का विशद अर्थ-लोकपक्ति शब्द का विशद अर्थ क्या है ? इसे दिखाने से पहले इस पर कुछ निवेदन करना आवश्यक है। लोक-एषणा का अर्थ सामान्यतया यही लिया जाता है कि व्यक्ति से यश की कामना अभी नहीं छूटी है। वह नाम चाहता है। यदि यही अर्थ अभीष्ट होता है तो स्वाध्याय-लाभों का वर्णन करते हुए ठीक इससे पहला लाभ यश-लाभ कहा है, प्रज्ञावृद्धिर्यशो लोकपक्ति:। क्योंकि स्वाध्यायशील व्यक्ति की प्रज्ञावृद्धि होती है, उसका यश होता है, और उसका लोक-परिपाक होता है ?

अब विचारना चाहिए कि यदि लोकैषणा में आए लोक शब्द का अर्थ यश अथवा कीर्ति है, तो यहां यश शब्द को अलग लिखने की क्या आवश्यकता थी ? अथवा यूं समझें कि दोनों का उद्देश्य भिन्न-भिन्न है। यदि नहीं तो दोनों में से एक शब्द अवश्य ही निरर्थक है। परन्तु ऐसा नहीं, यशोलाभ का ही अगला फल होता है लोक-परिपाक। जहां यश हृदय का विषय है। जिसके यश व कीर्ति वाणी का विषय है, वहां 'लोक' आंखों का विषय है। जिसके यश व कीर्ति आंखों से प्रत्यक्ष नहीं हो गए उसका अभी लोक-परिपाक नहीं हुआ समझना चाहिए, क्योंकि कीर्ति तो कान का विषय है-लोग गुणानुवाद गाते हैं, उसके कानों तक प्रशंसा शब्द पहुंचते हैं। व्यक्ति चाहता है कि जो मेरे गीत गाते हैं, वे कौन लोग हैं, जहां मैं उन्हें आंखों से देखूं तो सही। वह सहस्रश: प्रशंसकों की भीड़ लगी देखना चाहता है। वह अपने गिर्द सभी ओर पुरूषों के जमघट देखने का इच्छुक है। अथवा लोग ही उसके सुनने व देखने को टूट पड़ते हैं, तब जानो कि उसका लोक-परिपाक हो गया-**लोकपक्तिर्जाता**, मानो ये लोग उसके पक्के भक्त ही हो गए हैं। यह अवस्था यश से आगे की है, यह कान का विषय नहीं आंखों का, लोचन का (लोकृदर्शने) दर्शन का विषय है।

अर्थात् जब समाज में उसका यश व्याप जाता है, कानों-कान बात फैल जाती है, जिह्वा-जिह्वा पर उसका संशब्दन होने लगता है, तब उससे अगली एक और अवस्था आती है-व्यक्तियों की इच्छा होती है कि चलो, उस व्यक्ति के दर्शन करें, और उसी भावना से प्रेरित होकर दर्शनार्थी सहस्रों रूपया लगाकर, सहस्रों मील की यात्रा करके, सैंकड़ों कष्ट उठाकर, दर्शनार्थ जुट जाते हैं। दोनों ओर देखने की इच्छा है, भक्त तो उस यशस्वी व्यक्ति को देखने आए हैं और उनका भगवान् स्वयं दर्शनार्थियों के जमघट को देखने को उत्सुक है, तब हुआ लोक-परिपाक-लोकपक्त:।

प्राय: जब कभी दो व्यक्ति शर्त लगाते हैं तो परस्पर हाथ मिलाकर कहते हैं कि अच्छा मित्र, रही बात पक्की ? ठीक है ना ? वह भी हाथ पर हाथ मारकर कहता है कि-निश्चित, पक्की जानो। तो याज्ञवल्क्य भी स्वाध्यायशील व्यक्ति को विश्वास दिलाते हुए कहते है कि यह बात पक्की रही तो तुम्हारा लोक पक गया, यदि तुम स्वाध्याय करोगे तो तुम्हें सब ओर से लोग घेरे रहेंगे।

जब हम पकना क्रिया का प्रयोग करते हैं तो वहां क्या अर्थ लेते हैं? जब हम कहते हैं यह ईंट बड़ी पक्की है तो इसका अर्थ यही है कि वह इतनी मजबूत है कि तोड़ने से टूटती नहीं। यही बात वहां भी लागू होती है कि जब कहते हैं कि अमुक के दांत बड़े पक्के हैं। परन्तु जब हम कहते हैं कि लो चावल पक गए या अंगूर पक गए तो क्या वहां भी उसका यही अर्थ होता है कि चावल और अंगूर इतने कठोर हैं कि हथौड़े से भी नहीं टूटते ? नहीं, कदापि नहीं। तो फिर पकने का अर्थ क्या हुआ कठोर होना या गल जाना ? क्योंकि दोनों के लिए ही एक पच् धातु का प्रयोग हो रहा है। इस समस्या का हल भगवान पाणिनि महाराज ने कर दिया, जहां "डुपचष् पाके" धातु बनाई वहां उन्होंने एक और धात "पची व्यक्तीकरणे" का भी निर्माण कर दिया, जिसका अर्थ हुआ-पदार्थ का व्यक्तिकरण, प्रकटीकरण, स्पष्टीकरण अर्थात् व्यक्ति का व्यक्तित्व (प्रतिमूर्त होकर) सामने आ जाना। हम किसी को जब 'व्यक्ति' शब्द से व्यवहृत करते हैं तो वहां भी यही अर्थ होता है कि वह मनुष्य पका हुआ है, वह अनुभवी है, जिस प्रयोजन की सिद्धि के लिए आवश्यकता है वह उसके अनुरूप हो चुका है।

(क्रमश:)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

रावण प्रतिवर्ष जलता है.....फिर भी वह जीवित है, क्या हम उसे जला सकेंगे?

3 अक्तूबर 2014 को दशहरे का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। दशहरे से कुछ दिन पहले रामलीलाएं शुरू हो जाती हैं। राम के जीवन का अभिनय किया जाता है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम के जीवन की झांकियां निकाली जाती हैं। सभी लोग बड़े उत्साह के साथ इस पर्व को मनाते हैं। रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतले बनाने की कई दिन पहले तैयारियां शुरू हो जाती हैं। बड़े-बड़े पुतले इन तीनों के तैयार किए जाते हैं। दशहरे के दिन लोग बड़े उत्साह के साथ उस जगह पर इकट्ठे होते हैं जहां पर रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतलों को सजाया होता है। लोगों में बड़ा उत्साह और उमंग होती है। लोगों को बड़ी बेसब्री से इन्तजार होता है कि कब इन पुतलों को आग लगाई जाए और पुतलों के जलने का आनन्द लिया जाए। पुतलों के जलने के बाद सभी लोग बड़े उत्साह और खुशी के साथ अपने-अपने घरों को वापिस आ जाते हैं। पुतलों को जलाकर वे सोचते हैं कि हमने इनको जला दिया। यह सब देखने पर मन में एक प्रश्न उठता है कि पुतलों को जलाने से क्या इनको नष्ट किया जा सकता है? क्या रावण और कुम्भकर्ण मर चुके हैं? क्या मेघनाद मेरे देश से नष्ट हो चुका है? इतिहास में तो यही लिखा है। रामायण भी इसी बात की पुष्टि करती है। प्रतिवर्ष यह दशहरा भी इसी उपलक्ष्य में मनाया जाता है। परन्तु मुझे तो ऐसा लगता है कि ये तीनों आज भी जीवित हैं। केवल उनके पार्थिव शरीर ही भस्म हुए हैं-सूक्ष्म शरीर यहीं घूम रहे हैं, केवल काय नष्ट हुए हैं काम नहीं। स्वार्थ का रावण आज भी इस देश में राज्य कर रहा है और उसका बेटा मेघनाद भ्रष्टाचार के रूप में सारे देश पर छाया हुआ है, सर्वत्र इसका राज्य है, सर्वत्र इसका आतंक है और रावण का भाई कुम्भकर्ण है आलस्य जो सारी बुराईयों की जड़ है- भ्रष्टाचार और स्वार्थ का सहायक है। स्वार्थ रावण की प्रेरणा से ही उसका बेटा मेघनाद भ्रष्टाचार के रूप में मेरे देश में यह नृत्य कर रहा है, आलस्य रूपी कुम्भकर्ण से प्रभावित मेरे देश की जनता सोई हुई है।

त्रेतायुग के समय में एक रावण पैदा हुआ था और उसका अपराध सिर्फ इतना था कि उसने सीता का अपहरण किया था। परन्तु आज तो घर-घर में रावण बैठा है। माँ, बहन और बेटियां आज अपने घर में भी सुरक्षित नहीं हैं। दिन-दहाड़े भरे बाजार में उनके साथ छेड़छाड़ की जाती है, अपहरण किया जाता है और बलात्कार जैसी घटनाओं को अन्जाम दिया जाता है। छोटी-छोटी बच्चियों के साथ बलात्कार किया जाता है, भ्रूण हत्या के द्वारा उसे जन्म से पहले ही नष्ट किया जाता है। कम दहेज लाने पर उसे प्रताड़ित किया जाता है और उसे आत्महत्या करने को मजबूर किया जाता है। दिन-प्रतिदिन समाचारपत्रों में ऐसी अनेकों दिल को दहला देने वाली घटनाएं पढने को मिलती हैं। राम का नाम लेने वाले, रामलीलाएं करने वाले उनके जीवन का अभिनय तो करते हैं परन्तु उनके आदर्शों को अपने जीवन में नहीं अपनाते। राम का नाम लेने वाले आज धन सम्पत्ति के लिए भाई-भाई का खून कर देते हैं, बेटा बाप की हत्या कर देता है। जिस राम ने अपने भाई के लिए अयोध्या की राजगद्दी का त्याग कर दिया था, पिता दशरथ के न चाहते हुए भी उनके दिए वचनों को पूरा करने के लिए वनवास को गए थे , आज अपने आपको उसी राम का अनुयायी मानने वाले थोड़ी सी धन-सम्पत्ति और जमीन जायदाद के लिए एक दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं। आज हम पूजा राम की करते हैं और अनुकरण रावण का कर रहे हैं। प्रतिवर्ष लाखों रूपये खर्च करके रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतले जलाते हैं परन्तु ये फिर भी नहीं जलते, फिर दूसरे वर्ष इन्हें जलाते हैं। इसी प्रकार यह पुतला जलाने का सिलसिला कई वर्षों से चला आ रहा है परन्तु यह रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण ऐसे हैं जो जलते ही नहीं, नष्ट नहीं होते। आज हम सब स्वार्थी हो गए हैं। शासक हो चाहे जनता, सभी को अपनी पड़ी है, देश जाए भाड़ में। सभी अपने-अपने अधिकारों के, माँगों के झंडे लिए घूम रहे हैं, कर्त्तव्य की कोई पुकार नहीं सुनता। दफ्तरों में, स्कूलों में, दुकानों में सब जगह रिश्वतखोरी चलती है। सब रावण के प्रतिनिधि हैं, कुम्भकर्ण के भतीजे हैं, कोई काम करना नहीं चाहता है, पर इच्छा है सारा धन मेरे बैंक में चला जाए, सारा अन्न घी मेरे घर में भर जाए, सारी कोठियां मेरी हों, सारी कारें मेरी हों। हों कैसे? अपनी मेहनत की कमाई से नहीं अपितु मेघनाद रूपी भ्रष्टाचार के कारण।

अरे रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतले जलाने वालो! अगर जलाना ही है तो अपने अन्दर छिपे रावण को जलाओ। अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी बुराईयों को जलाओं। अगर सचमुच रावण को जलाना चाहते हो तो समाज में जो बुराईयां, कुरीतियां, फैल रही हैं, अमानवीय अत्याचार हो रहे हैं, लूटपाट की घटनाएं हो रही हैं, माँ, बहन और बेटियों पर जुल्म हो रहे हैं, भ्रष्टाचार रूपी राक्षस राष्ट्र को खोखला कर रहा है, इन सबके विरूद्ध लड़ने का संकल्प लो। पुतलों के जलाकर लाखों रूपया बर्बाद करने से अच्छा है कि इन पैसों से किसी गरीब का पेट भरें। पुतले जला देने से बुराईयां समाप्त होने वाली नहीं हैं, अत्याचार मिटने वाले नहीं हैं, भ्रष्टाचार खत्म होने वाला नहीं हैं। अगर ऐसा होता तो आज तक हमारे देश में कोई बुराई नहीं होती। हजारों वर्षों से हम रावण का प्रतीक मानकर पुतलों को जलाते है। रावण को हम सभी दुष्ट और बुराई का प्रतीक मानते हैं। परन्तु कभी अपने अन्दर झांककर देखने का प्रयत्न नहीं किया कि कहीं हमारे अन्दर भी तो रावण रूपी अहंकार, क्रोध, लोभ आदि तो विद्यमान नहीं हैं। हमें अपने अन्दर के रावण रूपी दुर्गुणों को नष्ट करना होगा। मेघनाद रूपी भ्रष्टाचार को समाप्त करना होगा, कुम्भकर्ण रूपी आलस्य का नाश करना होगा।

बन्धुओं! दशहरे का पर्व तो प्रतिवर्ष आता रहेगा, प्रतिवर्ष हम पुतले जलाते रहेंगे परन्तु आज इस पर्व पर हम सभी यह संकल्प धारण करें कि आज समाज में रावण के जितने भी प्रतिनिधि छुपे हुए हैं जो अपने आपको सभ्य दिखाने का ढ़ोग करते हैं ऐसे असमाजिक तत्त्वों से राष्ट्र को बचाएं। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प करें। दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, अन्धविश्वास आदि जितनी भी बुराईयां इस समाज को नष्ट करने वाली हैं, उन बुराईयों एवं कुरीतियों को जड़ से खत्म करने का दृढ़ निश्चय करें तभी दशहरे का पर्व मनाना सार्थक हो सकता है।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

गायत्री महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सिविल लाईन टैगोर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव 19 अक्तूबर 2014 रविवार को कृष्णा पार्क टैगोर नगर लुधियाना में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर गायत्री महायज्ञ होगा। यह सारा कार्यक्रम प्रात: 9:00 से 12:00 बजे तक होगा। इस अवसर पर उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचन तथा भजनोपदेशकों के भजन होंगे। आप सभी से प्रार्थना है कि इस अवसर पर पधार कर हमें कृतार्थ करें।

-वैद्य कविराज वैणीप्रसाद शास्त्री

आर्य समाज जीरा का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज जीरा का चुनाव दिनांक 7.9.2014 रविवार को सम्पन्न हुआ, जिसमे सर्वसम्मति से करीब 40 सालों से भी अधिक समय से सक्रिय रूप से कोषाध्यक्ष के रूप मे समाज के कार्य करते आ रहे श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी को इनके कार्य और विचार को मद्देनज़र रखते हुए सभी सदस्यों ने बड़ी ही खुशी व लगन के साथ आर्य समाज जीरा का प्रधान और कोषाध्यक्ष चुन लिया और समाज का सभी कार्य भार संभालने के लिए सौंपते हुए सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से उनका उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा कि समाज को ऐसे ही कर्मठ व लगनशील आर्यपुरूष प्रधान की ज़रूरत थी। अन्त में आर्य समाज जीरा के पुरोहित श्री किशोर कुणाल जी ने भगवान् से प्रार्थना करते हुए कहा कि भगवान् इनको लम्बी आयु और कार्य करने की अतुल क्षमता दे। ताकि इनके नेतृत्व में समाज इससे भी आगे बढ़ चढ़कर पल्लवित और पुष्पित होता रहे। अस्तु! धन्यवाद। सर्वेभवन्तुसुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।

-पंडित किशोर कुणाल, पुरोहित आर्य समाज जीरा

thearyasamaj.org

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का नारी-उत्थान में योगदान

-ले० डॉ० श्रीमती सरोज बाला, रिसर्च एसोसियट, स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र, अमृतसर

उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में जब भारतीय गतिरोध, विश्रृंखलता, जड़ता और विकृति की चरम सीमा पर था। यहां के लोग मूर्खतापूर्ण रीति-रिवाजों, नृशंसताओं, अज्ञान से उपजे अंधविश्वासों व कुरीतियों के कुएं में गिरकर अपनी वैदिक संस्कृति एवं परम्पराओं के महत्त्व को भूल चुके थे। चहुं ओर अज्ञानता का अंधकार ही अंधकार व्याप्त था, ऐसे भयावह समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ज्योतिर्मान नक्षत्र की भांति हाथों में वेदों का ज्ञान लेकर अवतरित हुए जिसके प्रकाश ने अज्ञानता रूपी तम में सोई हुई आर्य जाति को पुनः जागृत करने का दृढ़ निश्चय किया।

महर्षि ज्ञानी व दूरदर्शी थे। उन्हें ज्ञात था कि सभी कुरीतियों और पाखण्डों का मूल कारण समाज का वेदों से मुंह मोड़ लेना और अशिक्षित होना है। उनकी गहन अन्तर्दृष्टि ने यह जान लिया था कि साम्प्रदायिक ब्राह्मणों और पुरोहितों ने अपने निजी स्वार्थ हेतु प्राचीन ग्रन्थों की मनमानी भ्रामक व्याख्याएं की हैं, जिनकी आड़ में सत्य अदृश्य हो जाता है।

तत्कालीन समाज में सर्वाधिक दुरावस्था एवं शोचनीय स्थिति स्त्रियों और शूद्रों की थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। उनको वेदाध्ययन की मनाही, यज्ञोपवीत धारण करने की वर्जना तथा मन्त्रोच्चारण करने तक का निषेध था। बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, बालिकावध, विधवा-विवाह का कड़ा विरोध आदि कई प्रकार की कुरीतियों ने स्त्री को चलती फिरती जिन्दा लाश बना दिया था। उससे उसकी स्वतन्त्रता छीन ली थी। ऐसी विश्रृंखल व बुरी दशा के समूलनाश के लिए तथा समाज के पुनगर्ठन हेतु महर्षि स्वामी दयानन्द ने साहसपूर्वक कदम बढ़ाएं। उन्होंने समाज के सभी विकट क्षेत्रों में सुधारपरक कार्य करने आरम्भ किए। सामाजिक वर्ण-भेद, छुआछूत, अंधविश्वास, असमानता, रूढ़ियों तथा सबसे बढ़कर नारी के सामाजिक शोषण के निराकरण की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने अपने अनंत सुधारपरक कार्यों में समाज में स्त्री के स्थान की ओर विशेषकर ध्यान दिया क्योंकि उनके निकट नारी वह आदि मातृशक्ति थी जो समस्त सृष्टि के मूल में है। जिसके उद्धार से समाज का कल्याण सम्भव था। उन्होंने वैदिक युग की भांति स्त्रियों की गौरवशाली स्थिति को पुनः निर्मित करने के अद्भुत कार्य किए। 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, जिसने स्त्री-शिक्षा के लिए अनेक पाठशालाएं, गुरूकुल एवं महाविद्यालयों को स्थापित करवाया। उनकी प्रतिक्रिया-स्वरूप आज नारी शिक्षित, उच्चत्तर उपाधियों पर विराजमान, सभी क्षेत्रों में प्रगतिशील तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने में सक्षम व पुरूषों के समान कदम बढ़ाने में निपुण है।

वैदिक युग में स्त्रियों की गौरवशाली स्थिति-वैदिक युग में शिक्षा में प्रवेश करने के लिए कन्याओं का भी बालकों की भांति उपनयन संस्कार होता था। वे आचार्य-कुलों में ब्रह्मचर्यपूर्वक निवास करके विद्या ग्रहण करने की अधिकारिणी थी। वैदिक हवन यज्ञ में पुरूषों की सहभागी बनकर भाग लेती थी। वेदमन्त्रोच्चारण में सशक्त थी। वेद मन्त्रों के वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करने वाली लोमशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिकता, विवस्वान पुत्री यमी, पुलोमपुत्री शची, कामगोत्रीया श्रद्धा, ब्रह्मवादिनी जुहू, सूर्या, घोषा, गौरवीति आदि के नाम विशेष रूप से सुप्रसिद्ध है। गार्गी जैसी ब्रह्मवादिनी विदुषी ने राजा जनक की सभा में दिग्गज दार्शनिक पंडितों के साथ शास्त्रार्थ किया था। रामायण पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि माता सीता प्रतिदिन वैदिक-सूक्तों द्वारा प्रार्थना करती थी और श्रीराम की मां कौशल्या अनुष्ठान में बैठकर स्वयं मन्त्रों का पाठ किया करती थी। महाकवि भवभूति के 'उत्तररामचरितम्' नाटक में आत्रेयी नामक स्त्री का उल्लेख है, जिसने बाल्मीकि और अगस्त्य मुनि के आश्रमों में रहकर वेदान्त का अध्ययन किया था।

बौद्ध युग में स्त्री-दशा-वैदिक युग के पश्चात् बौद्ध युग में भी स्त्री-शिक्षा का प्रचार-प्रसार कायम रहा। अनेक स्त्रियों ने उच्च शिक्षा ग्रहण करके विशिष्ट उपाधियां प्राप्त की थीं। बौद्ध साहित्य में ऐसी कई बुद्धिमान महिलाओं का परिचय मिलता है जो पण्डितों से शास्त्रार्थ करने में निपुण थीं। 'सुक्का' नाम की विदुषी व्याख्यान-प्रस्तुति में अद्वितीय थी। उसकी सूचना नगर-निवासियों में ऐसी फैली थी कि 'सुक्का अमृत वर्षा कर रही है जो बुद्धिमान है, वे जावे और अमृतरस का पान करे।'

नारी की मध्ययुगीन ह्रासोन्मुखी अवस्था-मध्यकाल में स्त्री-शिक्षा की वैदिक परम्परा सर्वथा लुप्त हो गई। तुर्क-अफगानों के आक्रमणों ने भारतीय लोगों के जीवन को असुरक्षित कर दिया। स्त्रियों व कुमारियों के लिए आत्मरक्षा कर सकना सम्भव न रहा। इसी कारण बाल विवाह की प्रथा आरम्भ हो गई। कुमारियों की अस्मिता की सुरक्षा हेतु उन्हें विद्याग्रहण करने की मनाही हो गई। इस प्रकार भारत पर लगातार बाहरी आक्रमणकारियों के आक्रमणों में स्त्री की दशा दिन-प्रतिदिन गिरती गई। कन्याओं को शिक्षा व वेदाध्ययन से वंचित कर दिया गया। यह माना जाने लगा कि स्त्री और शूद्र एक समान है। इस समय स्त्री शिक्षा केवल गृहकार्य तक सीमित हो गई और वह भी अपने पारिवारिक जनों से प्राप्त होती थी। इस समय स्त्रियों के लिए न कोई आचार्यकुल ही रहा और न ही कोई गुरूकुल था।

उन्नीसवीं शताब्दी में स्त्री शिक्षा की दशा-बम्बई प्रान्त के अंग काठियावाड़ में महर्षि दयानन्द का जन्म वर्ष 1824 में हुआ। उसी समय की बात है कि बम्बई के गवर्नर माउण्ट सटुअर्ड एलफिन्स्टन ने प्रान्त के ज़िलाधीशों से उनके ज़िलों के चल रहे स्कूलों की विस्तृत रिपोर्ट भेजने को परिपत्र लिखा था। इसके उत्तर में ज़िलों की रिपोर्टों का प्रकाशन व सम्पादन श्री आर. बी. पारलेकर ने करते हुए स्त्री-शिक्षा के सम्बन्ध में लिखा था कि "यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि 1824 में जब ये रिपोर्ट ज़िलों से मांगी गयी थी, उस समय इनमें एक भी ऐसी लड़की का उल्लेख नहीं है जो इस प्रान्त के विद्यालय में पढ़ती हो। इसका कारण जल्दबाजी या किसी तथ्य को छोड़ देना नहीं था। वस्तुतः उस समय के सामान्य स्कूल केवल लड़कों को ही शिक्षा देते थे। इनमें लड़कियों के पढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। यह बात इन रिपोर्टों में दी गई टिप्पणियों से भी सूचित होती है। इनमें कहा गया है कि "भारतीय परम्परा के अनुसार स्त्रियों को शिक्षा पाने से वंचित रखा जाता है। विद्यालय वस्तुतः केवल लड़कों की शिक्षा के लिए ही है।" उसी समय बंगाल में भी स्त्री शिक्षा की दशा शोचनीय थी। लार्ड बैटिक के आदेश पर 1935-38 में स्कूल में शिक्षा पाने वाले व्यक्तियों का व्यापक सर्वेक्षण किया गया, जिससे पता चलता है कि उस समय साक्षर पुरूषों की संख्या 21,907 थी जबकि पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या केवल चार थी। उस समय बंगाल में यह अंधविश्वास प्रचलित था कि यदि लड़कियों को शिक्षित किया जाएगा तो वह विवाह के पश्चात् विधवा हो जाएगी।

महर्षि दयानन्द का स्त्री-विषयक दृष्टिकोण-ऐसा भयंकर समय जब ब्राह्मण वर्ण ने देश की अधिकांश जनता को शूद्र कहकर और नारी-जाति को शिक्षा के अयोग्य व केवल घर की वस्तु मानकर शिक्षा से वंचित कर दिया, वेदाध्ययन करने की बात तो दूर रही वेदों के दर्शन भी उनके लिए दुर्लभ हो चुके थे। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने अपने पूर्ण साहस से इन कुरीतियों को वेद-विरुद्ध और परम्परा-विरुद्ध सिद्ध करके स्त्री की शिक्षा के समान अधिकार देकर उन्हें मानव की तरह जीने का अधिकार दिया।

महर्षि दयानन्द ने व्यक्ति को शिक्षा के बिना अधूरा बताया। उनके अनुसार नारी जब तक शिक्षित नहीं होगी तब तक जागरूक नहीं हो सकती। वह अपने अस्तित्व को नहीं समझ सकती। अतः वेदों की विद्या जो ताले में बन्द थी, दयानन्द ने उसकी कुंजी न केवल पुरूषों के लिए अपितु स्त्रियों के लिए भी सुलभ कराते हुए वेद का प्रमाण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि "जैसे पुरूषों को व्याकरण, धर्म और व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

अथर्ववेद में शरीर रचना

-ले० शिव नारायण उपाध्याय 73 शास्त्री नगर कोटा

वेद चूंकि सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है इसलिए उसमें शरीर रचना और उसकी कार्य प्रणाली का भी विस्तृत वर्णन हुआ है। विशेष रूप से अथर्ववेद काण्ड 2 सूक्त 33 अथर्ववेद काण्ड 9 सूक्त 9 अथर्ववेद काण्ड 10 सूक्त 2 व 9 तथा काण्ड 11 सूक्त 8 में इस विषय का जो वर्णन हुआ है। वह आधुनिक विज्ञान के अनुरूप है। अथर्ववेद काण्ड 11 सूक्त 8 में इस विषय को सृष्टि उत्पत्ति के समय से ही उठाया है।

दश साकमजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा।
यो वै तान् विद्यात् प्रत्यक्षं स वा अद्य महद् वदेत्।
-अथर्व० 11.8.3

पदार्थ-(दश देवाः) दस दिव्य पदार्थ (पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां) (पुरा) पूर्वकाल में (देवेभ्यः) दिव्य पदार्थों (कर्म फलों) से (साकम्) परस्पर मिले हुए (अजायन्त) उत्पन्न हुए (यः) जो पुरूष (वै) निश्चय करके (तान्) उनको (प्रत्यक्षम्) प्रत्यक्ष (विद्यात्) जान लेवे (सः) वह (वैः) ही (अद्य) आज (महत्) महान् ब्रह्म को (वदेत्) बतलावे।

भावार्थ-उस ब्रह्म के सामर्थ्य से प्राणियों के पूर्व संचित कर्म के अनुरूप पांच ज्ञानेन्द्रियां कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा नासिका और पांच कर्मेन्द्रियां वाक् हाथ, पांव, पायु, उपस्थ कर्मों को जानने व करने के लिए उत्पन्न हुए। विद्वान् पुरूष इसे जानकर परमात्मा का उपदेश करते हैं।

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या।
व्यानोदानौ वाङ् मनस्ते वा आकूतिमावहन्।
-अथर्व० 11.8.4

प्राण, अपान, नेत्र, चक्षु, कान और जो सुख की निर्हानि और दुःख की हानि, व्यान और उदान, वाणी और मन इन सबने निश्चय करके संकल्प को सब ओर से पूरा कराया।

यदा केशानस्थि स्नाव मांस मज्जानमाभरत्।
शरीरं कृत्वा पादवत् कं लोकमनु प्राविशत्॥
-अथर्व० 11.8.11

पदार्थ-(यदा) जब प्राणी के (केशान्) बालों (अस्थि) हड्डी (स्नाव) सूक्ष्म नाड़ी (वायु ले जाने वाली नस) (मांसम्) मांस (मज्जानम्) मज्जा (हड्डियों के भीतर के रस) को (आभरत्) उस (कर्ता परमेश्वर) ने लेकर धरा। (पादवत्) पैरों वाला (शरीरम्) शरीर (कृत्वा) बनाकर (कम् लोकम्) कौन से स्थान में उस (परमेश्वर) ने (अनु) पीछे (प्र अविशत्) प्रवेश किया।

यहां ध्यान देने की बात यह भी है कि शरीर को बनाकर ब्रह्म उसमें प्रवेश कर गया।

कुतः केशान् कुतः स्नाव कुतो अस्थी न्याभरत्।
अङ्गा पदाणि मज्जानं को मांसं कुत आभरत्॥
-अथर्व० 11.8.12

भावार्थ-परमेश्वर प्राणियों के शरीर के बड़े और छोटे अवयव किस सामग्री से बनाता है ? यह प्रश्न इस मंत्र में किया गया है। उत्तर इस प्रकार है-

संसिचो नाम ते देवा ये संभारान्त्समभरन्।
सर्वं संविच्य मर्त्यं देवा पुरुषमाविशन्॥
-अथर्व० 11.8.13

भावार्थ-परमेश्वर के सामर्थ्य से पूर्व कल्प के समान पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि पांच तत्व आपस में मिलकर शरीर के इन्द्रिय आदि अवयवों को बनाकर स्वयम् भी प्राणियों के शरीर में प्रवेश कर रहे हैं।

उरू पादावष्ठिवन्तौ शिरो हस्तावथो मुखम्।
पुष्टीर्वर्जह्यो पार्श्वे कस्तत् समद् धादृषिः॥
-अथर्व० 11.8.14

पदार्थ-(उरू) दोनों जंघाओं (अष्ठीवन्तौ) दोनों घुटनों, (पाद) दोनों पैरों (हस्तौ) दोनों हाथों (अथो) और भी (शिरः) शिर (मुखम्) मुख (पुष्टीः) पसलियों (वजंह्यो) दोनों कुच की टोनी (पार्श्वे) दोनों कांखों को (तत्) तब (कः) किस (ऋषिः) ऋषि ने (सम् अवधात्) मिला दिया।

शिरो हस्तावथो मुखं ग्रीवाश्च ककिसा।
त्वचा प्रावृत्य सर्वं तत् समदधान्मही॥
-अथर्व 11.8.15

पदार्थ-परमात्मा ने तत्वों के संयोग वियोग से प्राणियों के अंगों को बनाकर और ऊपर से खाल में लपेट कर एक दूसरे से मिला दिया है। यह गत मंत्र का उत्तर है।

अब हम इस विषय को अथर्ववेद 10 सूक्त 9 के आधार पर वर्णन करते हैं। इस सूक्त में मंत्र संख्या 13 से 24 तक शरीर का ही वर्णन है।

यत् ते शिरो यत् ते मुखं यौ कर्णौ ये च ते हनू।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥
-अथर्व० 10.9.13

पदार्थ-(यत्) जो (ते) तेरा (शिरः) शिर (यत्) जो (ते) तेरा (मुखम्) मुख (यौ) जो (कर्णौ) दो कान (च) और (ते) तेरा (हनू) दो जबड़े हैं। वे सब (अमिक्षाम्) आमिक्षा (उष्ण दूध में दही मिलाने से उत्पन्न वस्तु), (क्षीरम्) दूध (सर्पिः) घी (अथो) और भी (मधु) ब्रह्म विद्या (दात्रे) दाता को (दुह्रताम्) भर पूरा करें। इसी तरह से इसमें सम्पूर्ण शरीर का वर्णन हुआ है। हम यहां केवल मंत्र दे रहे हैं अर्थ सरल है अतः उसे छोड़ देते हैं-

यस्ते क्लोमा यद्धदयं पुरीतन् सहकण्ठिका।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥15॥

यत् ते यकृद् ये मतस्ने यदान्त्रं याश्च ते गुदाः।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥16॥

यस्ते प्लाशिर्यो कनिष्ठुयौ कुक्षी यच्च चर्म ते।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥17॥

यस्ते मज्जा यदस्थि यन्मां सं यच्च लोहितम्।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥18॥

यौ ते बाहू ये दोषणी यावंसौ या च ककुत।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥19॥

यास्ते ग्रीवा ये स्कन्धा याः पृष्टीर्याश्च पर्शवः।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥20॥

यौ ते ऊरू अष्ठीवन्तौ ये श्रोणी या च ते भसत्।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥21॥

(ऊरू) दो घुटने (अष्ठीवन्तो) घुटनों के दो जोड़ (ये) जो (श्रोणी) दो कूल्हे (च) और (या) जो (ते) तेरा (भसत्) पेडू है।

यत् ते पुच्छं ये ते बाला यदूधो ये च ते स्तनाः।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥22॥

यास्ते जङ घा याः कुष्ठिका ऋच्छरा ये च ते शफाः।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥23॥

यत् ते चर्मं शतौदने यानि लोमान्यध्न्ये।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥24॥

इसी प्रकार अथर्ववेद काण्ड 10 सूक्त 2 में मंत्र संख्या 1 से 17 तक शरीर रचना के साथ उसकी कार्य प्रणाली का भी वर्णन किया है। लेख को अधिक विस्तार नहीं देकर हम पाठकों के लिए केवल पांच मंत्र दे रहे हैं।

को अस्य बाहू समभरद् वीर्यं करवादिति।
अंसौ को अस्य तद् देवः कुसिन्धे अध्या दधौ॥
-अथर्व० 10.2.5

पदार्थ-(कः) किस (परमेश्वर) ने (अस्य) इस (मनुष्य) के (बाहू) दोनों भुजाओं को (सम् अभरत्) यथावत् पुष्ट किया है कि वह (वीर्यम्) वीर कर्म (करवात् इति) करता रहे। (तत्) इसीलिए (देवः) प्रकाशमान् (कः) प्रजापति ने (अस्य) इस (मनुष्य) के (अंसौ) दोनों कन्धों को (कुसिन्धे) धड में (अधि) ऐश्वर्य को (आ) यथावत् (दधौ) धारण कर दिया है।

कः सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णाविमौ नासिके चक्षणी मुखम्।
ऐषां पुरूत्रा विजयस्य मह्मनि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम्।
-अथर्व० 10.2.6

भावार्थ-कर्ता परमेश्वर ने मस्तक के सातों गोलक अमूल्य पदार्थ बनाए हैं। जो प्राणी जितेन्द्रिय होकर इनको वेद विहित कर्मों में लगाते हैं वे सुखी होती हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

thearyasamaj.org

पृष्ठ 4 का शेष-महर्षि दयानन्द.....

वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्पविद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए। क्योंकि इनके सीखे बिना सत्यासत्य का निर्णय, पति आदि के अनुकूल वर्तमान, यथायोग्य सन्तानोत्पत्ति, उनका पालनवर्द्धन और सुशिक्षा करना, घर के सब कार्यों को जैसा चाहिए वैसा करना-कराना, वैद्यक-विद्या से औषधवत्, अनन-पान बनाना और बनवाना नहीं कर सकती, जिससे घर में रोग कभी न आवे और सब लोग सदा आनन्दित रहे। शिल्प विद्या के जाने बिना घर का बनवाना, वस्त्र, आभूषण आदि का बनाना-बनवाना, गणित विद्या के बिना सबका हिसाब समझना-समझाना, वेदादि शास्त्रविद्या के बिना ईश्वर और धर्म को न जान के अधर्म से कभी नहीं बच सकती।''

स्वामी जी स्त्रियों के बहुआयामी विकास के पक्षधर थे। वह स्त्रियों को वेदाध्ययन, यज्ञोपवीत धारण करवाने व उच्च शिक्षा देने के समर्थक थे। उन्होंने बताया कि वेदों में सब मनुष्यों को वेदादि शास्त्र पढ़ने-सुनने का प्रमाण है। महर्षि ने वैदिक प्रमाणों के आधार पर ही स्त्री और शूद्र को वेदों का अध्ययन करना सिद्ध किया। उन्होंने कहा कि ''सब स्त्री और पुरूष अर्थात् मनुष्य मात्र को पढ़ने का अधिकार है। तुम कुआ में पड़ो और यह श्रुति (स्त्रीशूद्रो नाधीयातापिति श्रुते:) तुम्हारी कपोल कल्पना से पैदा हुई है। किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की नहीं। और सब मनुष्यों के वेदादि शास्त्र पढ़ने-सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय के दूसरे मन्त्र में है।''

कर्मवादी एवं पुरूषार्थ के प्रबल समर्थक स्वामी जी ने शिक्षा को व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति का आधार बताया। उन्होंने कहा कि ''बालक-बालिकाओं को गुरूकुलों में भेजना अनिवार्य है और जो न भेजे, उसे दण्ड दिया जाना चाहिए, क्योंकि शिक्षा प्राप्त करके ही शूद्र प्रकाश से युक्त होकर देव अर्थात् विद्वान् नाम प्रख्यात है।''

बाल-विवाह के विरोधी-अल्पावस्था में वैवाहिक बन्धनों में बारम्बार प्रजनन कार्य में कमज़ोर होकर अल्पायु में मर रही कन्याओं के प्रति महर्षि दयानन्द जी की गहन संवेदना थी। उनका मानना था कि जब बच्चों से बच्चे पैदा होंगे तो वे अस्वस्थ, निर्बल व रोगी होंगे तो राष्ट्र शक्तिशाली कैसे बन सकेगा। पूना में दिए गए अपने सम्भाषण में उन्होंने कहा था कि ''यदि इस समय हम लोगों में बाल विवाह प्रचलित न हो तो विधवाओं की संख्या कभी इतनी न होती और न इतने गर्भपात तथा भ्रूणहत्याएं होती और न इतने रोगों की अधिकता होगी। देश की उन्नति और प्रगति को ध्यान में रखते हुए समाज को जागृत करने हेतु उनके विचार थे कि ''जिस देश में ब्रह्मचर्य विद्याग्रहण रहित बाल्यावस्था और अयोग्यों का विवाह होता है, वह देश दु:ख में डूब जाता है क्योंकि ब्रह्मचर्य विद्या के ग्रहणपूर्वक विवाह में सुधार ही से सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है।'' उन्होंने माता-पिता को सचेत करते हुए कहा कि-

''यदि कन्या बालकांश्च पितरौ ब्रह्मचर्येण विद्या: प्रापयेयु:
पूर्णयुवावस्थाया विवाहयेयुस्तर्हि तेऽत्यन्तं सुखमाप्नुयु।''

-सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास

अर्थात् कन्याओं और बालकों को माता-पिता ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्याएं प्राप्त करवाएं और पूर्ण युवावस्था में उनका विवाह करेंगे, तो वे अत्यन्त सुख पाएंगे।

पर्दा-प्रथा के विरोधी-महर्षि ने पर्दा-प्रथा का विरोध भी तर्कों के आधार पर करके भारतवासियों को जागृत करने का प्रयास किया। स्वामी जी ने सप्रमाण यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि वधू-अवगुंठन में अदृश्य रहे ऐसा कोई विधान नहीं है। उन्होंने बताया कि यह प्रथा मुस्लिम साम्राज्य में महिलाओं की सुरक्षा की दृष्टि से चलाई गई थी जो रूढ़ होकर कुरीति बन गई। सन् 1874 में प्रयाग और 1877 में सहारनपुर में अपने सम्भाषण में उन्होंने कहा कि ''पर्दा की कुरीति के कारण ही महिलाएं विद्वानों के व्याख्यान नहीं सुन सकती और न उससे लाभ उठा कर अपनी अविद्या को दूर कर सकती है। स्त्रियों को पर्दे में रखना अनुचित है। पर्दा हटाने से पाप और व्याभिचार नहीं बढ़ेगा। पर्दे में भी पाप होते हैं। सदाचारी बिना विद्या प्राप्ति के नहीं हो सकता। अंग्रेज़ों की स्त्रियां पर्दा नहीं करती और हिन्दुओं की स्त्रियों की अपेक्षा बुद्धिमत्ती, विदुषी और साहसी होती हैं।''

विधवा-विवाह के पक्षधर-विधवा-विवाह के संबंध में महर्षि द्वारा अभिव्यक्त विचारों ने स्त्री-जाति की सम्पूर्ण परिस्थिति में परिवर्तन लाने का क्रांतिकारी कार्य किया। उन्होंने इसका साहसपूर्वक समर्थन करते हुए कहा कि ''ईश्वर के समीप स्त्री-पुरूष बराबर है, क्योंकि वह न्यायकारी है, उसमें पक्षपात का लेश नहीं है। जब पुरूषों को पुनर्विवाह करने की आज्ञा दी जाए तो स्त्रियों को दूसरे विवाह से क्यों रोका जाए।'' उन्नीसवीं सदी के भारतीय समाज में बाल विवाह प्रथा होने के कारण विधवाओं की संख्या बहुत अधिक थी। महर्षि का मानना था कि जो स्त्री बचपन में ही विधवा हो जाए, जिसका अपने पति से संभोग नहीं हुआ हो, उनको पुनर्विवाह कर लेना चाहिए। यह पुनर्विवाह शास्त्रानुमोदित व धर्मानुसार है। उस समय लाखों बाल विधवाएं विवश होकर देवालयों, मन्दिरों और मठों में आश्रय हेतु दुराचारियों के चंगुल में फंसकर पाप का जीवन व्यतीत करती थीं। इसलिए ऐसी दशा में सुधार लाने के लिए महर्षि ने विधवा-विवाह पर ज़ोर दिया।

स्त्री-सम्मान के पक्षधर-उस समय स्त्री जो अबला एवं पतित अवस्था में दिखाई पड़ रही थी। जिसकी दयनीय स्थिति को देखकर कवि मैथिलीशरण ने यहां तक कह दिया कि ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में है पानी।'' उसे स्वामी जी ने सबला, भाग्या, अत्यन्त सम्मानित व श्रेष्ठ माना। उनका विचार था कि जब कन्या पत्नी बनकर पति के नये घर में जाती है तो वहां उसका सम्मान होना अनिवार्य है। उन्होंने एक श्लोक को उद्धृत करते हुए कहा कि जिस घर में स्त्री का सत्कार होता है, वहां देवता निवास करते है और जिस घर में नारियों का सम्मान नहीं होता वहां किये हुए सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता,
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया

इस प्रकार स्वामी जी ने नारी सम्मान पर बल देकर किसी नई परम्परा का दिग्दर्शन नहीं कराया वरन उन्होंने प्राचीन वैदिक प्रथा का ही स्मरण मात्र कराया, जिसको समाज भूल चुका था।

नारी-कर्त्तव्यों का उल्लेख-महर्षि दयानन्द जी ने नारी के लिए कुछ कर्त्तव्यों का पालन करना भी आवश्यक बताया जिससे उसका सम्मान रक्षा बनी रहे। उन्होंने कहा कि नारी को सदैव अपने पति और परिवार के सभी सदस्यों को अपनी सेवा-भावना से प्रसन्न और सन्तुष्ट करना चाहिए। पति की आय के अनुसार ही खर्च करना चाहिए। गृह कार्य में निपुण होना अनिवार्य है। खाना बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि खाना स्वास्थ्यप्रद, स्वादिष्ट और पवित्र हो। उसे मितभाषी और मधुरभाषी होना चाहिए व घरेलू उद्योगों का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह धन कमा कर अपनी घर गृहस्थी बिना किसी अभाव के चला सके। ऐसी शिक्षित व निपुण स्त्रियां ही गृह-लक्ष्मी कहलाने में सक्षम होती हैं।

उपसंहार-उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महर्षि की नारी-उत्थान की बड़ी विशेषता यह थी कि वह नारियों की आत्मा, मन, बुद्धि और शरीर का सर्वांगीण विकास करना चाहते थे। महर्षि कन्याओं को साक्षर बनाने के साथ-साथ उन्हें वेद-वेदांग पढ़ाने और गृहोपयोगी कलाओं को सिखाने पर बल देते थे। आज स्वामी जी के निर्वाण के लगभग 131 वर्षों बाद स्त्री-शिक्षा पर विशेष बल देने के लाभों को प्रत्यक्ष देख रहे हैं। आज भारत के नगरों और कस्बों में नारी शिक्षा आम बात है। आज वह समय काफी पीछे छूट गया है जब लड़कियों को विद्यालयों में पढ़ाने हेतु उनके माता-पिता को आर्य समाजी हाथ जोड़कर निवेदन किया करते थे। आज स्त्रियां ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों, शासन-तंत्र और शिक्षण संस्थाओं आदि में उच्च पदों पर आसीन है, जिसका श्रेय अनथक प्रयास करने वाले महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को जाता है।

यही नहीं जिस विधवा-विवाह के लिए आर्य समाज संगठन ने विशेष कार्य किए वे आज भारतीय समाज के उच्च वर्ग के साथ-साथ मध्यम वर्ग में भी स्वीकृत हो चुके हैं। बाल-विवाह के निषेध के लिए राज्य की ओर से कठोर कानून बना दिए गए है जिनका उल्लंघन करने पर अभिभावकों के लिए कठोर दंड के प्रबंध है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार होने के साथ पर्दा की कुप्रथा भी आज अधिकांश भारत में लुप्त हो चुकी है। यह समस्त जागृति के उदाहरण महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा दिखाए गए ज्ञान रूपी प्रकाश के मार्ग से ही सम्भव हो सके हैं।

आज 21वीं सदी में नारी सशक्तिकरण के जिन संदर्भों की बात हम करते हैं कि नारियों ने ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला, संगीत, प्रौद्योगिकी आदि सभी क्षेत्रों में अपनी विशेष उन्नति की है। उनके ऊपर से सभी कुप्रथाएं हट गई हैं। वे पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में सक्षम है आदि। इन समस्त बातों का श्रेय महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को जाता है क्योंकि इस आंदोलन (नारी-सशक्तिकरण) का आरम्भ तो उन्होंने डेढ़ सौ वर्षों पहले ही कर दिया था। वह इतने प्रतिभावान दूरदर्शी थे कि उन्हें तभी स्त्रियों का उज्जवल भविष्य भली-भांति दिखाई दे रहा था। ऐसे युग-पुरूष के प्रति श्रद्धाभाव से नतमस्तक होकर हृदय से निम्नलिखित पंक्तियां उद्धत होती है-

'सात समुंद्र की मसि करूं, लेखनी सब बन राय,
सब धरती कागद करूं, ऋषि गुण लिखा न जाय।'

thearyasamaj.org

शोक समाचार

अत्यन्त दुख के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का दिनांक 3.9.2014 को नई दिल्ली में निधन हो गया। आप पिछले कुछ वर्षों से रूग्ण अवस्था में थी। आप श्री योगेश मुंजाल ट्रस्टी श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं लाला दीवान चंद ट्रस्ट के अतिरिक्त अन्य कई शिक्षण संस्थाओं एवं सामाजिक संस्थाओं के अधिकारी तथा सुप्रसिद्ध हीरो परिवार के प्रमुख सदस्य की धर्मपत्नी एवं महात्मा सत्यानंद जी मुंजाल जोकि विश्व की आर्य समाजों में चर्चित नाम हैं कि पुत्रवधू थीं।

आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ कर गई है और सारे दायित्वों से निवृत्त हो चुकी थी। यज्ञ से आपका विशेष लगाव था। आप के भौतिक वातावरण में महिलाएं जहां किट्टी आदि परम्पराओं में संलग्न हैं वहां श्रीमती हर्ष मुंजाल जी ने महिलाओं का एक छोटा सा संगठन बनाया जिसकी 60 महिला सदस्याएं हैं। इस संगठन की एक महिला के यहां प्रति मास क्रमानुसार यज्ञ करवाया जाता है और श्रीमती हर्ष मुंजाल स्वयं यज्ञ करवाती थीं। निस्संदेह यह अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उन्होंने अपने पुत्र पुत्रियों को भी इस प्रकार के संस्कार दिये और वे भी यज्ञ से जुड़े हुये हैं। मुंजाल परिवार के प्रत्येक सदस्य के घर पर यज्ञशाला है और वहां प्रतिदिन यज्ञ होता है। उनकी अन्तिम प्रार्थना सभा दिनांक 6.9.2014 को हुई जिसमें आर्य जगत के कई उच्चकोटि के सन्यासी एवं विद्वान पधारे। ऐसी दिवंगत यज्ञप्रेमी मां के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करे और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दुख सहन करने की शक्ति मिले।

-अजय सहगल

आर्यसमाज मन्दिर हबीबगंज अमरपुरा, लुधियाना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) लुधियाना का 41वां वार्षिकोत्सव दिनांक 13 व 14 सितम्बर 2014 को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस भव्य समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता आचार्य रामानन्द जी शिमला एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित उपेन्द्र जी आर्य ने अपने भजनों एवं आचार्य ने अपने प्रवचनों द्वारा सभी को आनन्दित किया। कार्यक्रम 13.9.14 को प्रातः यज्ञ के द्वारा प्रारम्भ हुआ। यज्ञ की ज्योति प्रति वर्ष की भान्ति श्री नरेन्द्र जी वर्मा एवं श्रीमती सुमन वर्मा ने प्रदीप्त की। उनके साथ श्री आर. पी. गोयल, श्री शान्ति लाल चुघ दम्पति, आर्य समाज के महामन्त्री श्री जनक राज भगत दम्पति ने यज्ञमान पद को सुशोभित किया। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित योग राज शास्त्री पुरोहित आर्य समाज हबीबगंज थे। उनके ब्रह्मत्व में दो दिन यज्ञ हुआ। यज्ञ के पश्चात् उपेन्द्र जी के भजन एवं आचार्य जी के प्रवचन होते रहे। 14.9.2014 दिन रविवार को विशेष समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्रातः यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री मनीष मदान एवं श्रीमती शालू मदान, श्री संजय जी एवं श्रीमती प्रवीण बाला, श्रीमती एवं श्री शशि औल, श्रीमती एवं श्री अनिल बजाज एवं आर्य समाज के प्रधान डा. जगदीश गांधी, श्रीमती विनोद गांधी थे। यज्ञ के पश्चात् यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। तत्पश्चात् सभी यजमानों एवं सभी आगन्तुक महानुभावों को जलपान करवाया गया। तत्पश्चात आर्य समाज के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री मनीष मदान एवं श्रीमती शालू मदान ने ध्वजारोहण किया। वैदिक धर्म के जयकारे से ध्वजारोहण हुआ। तत्पश्चात् पंडाल में समारोह प्रारम्भ हुआ। समारोह प्रारम्भ ज्योति प्रदीप्त कर के किया गया। ज्योति के लिए आर्य समाज के उपप्रधान श्री नलिन शर्मा जी एवं श्रीमती अरूणा शर्मा जी तथा उनकी माता श्रीमती इन्द्रा शर्मा जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। ज्योति प्रदीप्त के पश्चात् श्री उपेन्द्र जी आर्य के भजन हुए। उनके भजनों से श्रोता अति प्रसन्न हुए। तत्पश्चात् समारोह में विशेष अतिथि श्री सुरेन्द्र डाबर M.L.A, श्री अमित गोसाई, श्री रमेश जोशी, श्री रमेश बांगड़, श्री अरूण थापर, प्रिंसीपल विजय दयोड़ा पधारे। इसके अतिरिक्त श्री मोहिन्द्रपाल जी, श्री प्रवीण बांसल, माता शान्ति देवी जी इलाका कौंसलर श्री गुरदीप सिंह, नीतू सभी को सम्मानित किया। तत्पश्चात् आचार्य रामानन्द जी का सारगर्भित प्रवचन हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता करते हुए माता राजेश शर्मा जो कि ज़िला आर्य सभा की प्रधाना है। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में एक वेद मन्त्र का संदेश देते हुए सभी को एक होकर रहना एवं चलना चाहिए। संयोगवश 14.9.14 को आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान एवं आर्य जगत के पितामह कहलाने वाले स्व. श्री आशानन्द जी का स्मृति दिवस भी था। सभी ने उनको याद किया और उनके कार्य को सराहा। अन्त में आर्य समाज की संरक्षिका श्रीमती विनोद गांधी ने सभी आए हुए महानुभावों का धन्यवाद किया। इस समारोह में लुधियाना के सभी आर्य समाजों के अधिकारीगण एवं सभी सदस्यगण, सभी शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी वर्ग, अध्यापक वर्ग सभी ने इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग लिया। सैंकड़ों लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर इस कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। दोपहर एक बजे शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् ऋषि लंगर चलता रहा।

-महामन्त्री जनकराज भगत

पृष्ठ 5 का शेष- अथर्ववेद में.....

मस्तिष्कमस्य यतमो ललाटं ककाटिकां प्रथमो यः कपालम्।
चित्वा चित्यं हन्वोः पुरूषस्य दिवं रूरोह कतमः सदेवः॥

-अथर्व० 10.2.8

भावार्थ-(यतमः) कौन सा (प्रथमः) सबसे पहिला (यः) नियन्ता (अस्य) इस (पुरूषस्य) पुरूष के (मस्तिष्कम्) भे को (ललाटम्) ललाट को और (ककाटिकाम्) शिर के पिछले भाग को (कपालम्) खोपड़ी को और (हन्वोः) दोनों जबड़ों को (चित्यम्) संचित को (चित्वा) संचय करके (वर्तमान है), (सः) वह (कतमः) कौन सा (देवः) देव (दिवम्) प्रकाश को (रूरोह) चढ़ा है।

को अस्मिन् रूपमदधात् को मह्मानं चनाम च।
गातुं को अस्मिन् कः केतुं कश्चरित्राणि पुरूषे॥

-अथर्व० 10.2.12

पदार्थ-(कः) कर्ता (परमेश्वर) ने (अस्मिन्) इस (मनुष्य) में (रूपम्) रूप (कः) कर्ता ने (मह्मानम्) महत्त्व (च) और (नाम) नाम (च) भी (अदधात्) रखा है, (कः) कर्ता ने (अस्मिन्) इस (पुरूषे) मनुष्य में (गातुम्) गति (कः) कर्ता ने (केतुम्) विज्ञान (च) और (चरित्राणि) अनेक आचरणों को रखा है।

को अस्मिन् प्राणमवयत् को अपानं व्यानमु।
समानमस्मिन् को देवाऽधि शिश्राय पुरूषे॥ -अथर्व० 10.2.13

पदार्थ-(कः) कर्ता ने (अस्मिन्) इस (मनुष्य) में (प्राणम्) प्राण (भीतर जाने वाले श्वास) को (कः) प्रजापति ने (अपानम्) अपान (बाहर आने वाला श्वास) को (द) और (व्यानम्) व्यान (शरीर में घूमने वाला वायु) को (अवयत्) चुना है। (देवः) देव (कः) प्रजापति ने (अस्मिन्) इस (पुरूषे) मनुष्य में (समानम्) समान (हृदयस्थ वायु) को (अधि शिश्राय) ठहराया है।

अब हम अथर्ववेद काण्ड 9 सूक्त 8 के तीन मंत्र शरीर रचना से सम्बन्धित रख रहे हैं। इसमें शरीर रचना को रोगों के माध्यम से वर्णन किया गया है।

शीर्षक्तिं शीर्षामयं कर्णशुलं विलोहितम्।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्नि र्मन्त्रयामहे॥ -अथर्व० 9.8.1

पदार्थ-(शीर्षक्तिम्) शिर की पीड़ा (शीर्षामयम्) शिर की व्यथा (कर्ण शूलम्) कर्ण शूल और (विलोहितम्) बिगड़े रक्त को (सर्वम्) सब (ते) तेरे (शीर्षण्यम्) शिर के (रोगम्) रोगों को (बहिः) बाहर (नि मंत्रयामहे) हम विचारपूर्वक निकालते हैं।

उदरात् ते क्लोम्नो नाभ्या हृदयादधि।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्॥

-अथर्व० 9.8.12

पदार्थ-(ते) तेरे (उदरात्) उदर से (क्लोम्नः) फेफड़े से (नाभ्याः) नाभि से और (हृदयात् अधि) हृदय से भी (सर्वेषाम्) सब (यक्ष्माणाम्) क्षय रोगों के (विषम्) विष को (त्वत्) तुझसे (अहम्) मैंने (नि) निकालकर (अवोचम्) बता दिया है।

पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणिभ्यां परि भंससः।
अनूकादर्षणीरूष्णिहाभ्यः शीर्ष्णो रोगमनीनशम्॥

-अथर्व० 10.2.21

पदार्थ-(ते) तेरे (पादाभ्याम्) दोनों पैरों से (जानुभ्याम्) दोनों जानुओं से (श्रोणिभ्याम्) दोनों कूल्हों से और (भंससः परि) गुह्य स्थानों के चारों ओर से (अनुकात्) रीढ़ से और (उष्णिहाभ्यः) गुद्दी की नाड़ियों से (अर्षणीः) महा पीड़ाओं को और (शीर्ष्णः) शिर के (रोगम्) रोग को (अनीनशम्) मैंने नाश कर दिया है।

अब विषय को अधिक विस्तार न देकर अथर्ववेद काण्ड 2 सूक्त 33 से 2 मंत्र देकर विराम देते हैं।

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरूदरादधि।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्यां वि गृहानि ते॥ -अथर्व० 2.23.4

पदार्थ-(ते) तेरी (आन्त्रेभ्यः) आंतों से (गुदाभ्यः) गुदा की नाड़ियों से (वनिष्ठो) भीतरी मल स्थान से (उदरात अधि) उदर में से और (ते) तेरी (कुक्षीभ्याम्) दोनों कांखों से (प्लाशेः) कांख की थैली में से और (नाभ्यः) नाभि से (यक्ष्मम्) क्षय रोग को (वि गृहामि) मैं निकाल देता हूं।

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि ग्रहामि ते॥

-अथर्व० 2.33.6

पदार्थ-(ते) तेरे (अस्थिभ्यः) हड्डियों से (मज्जभ्यः) मज्जा धातु से (स्नावभ्य) पुट्ठों से और (धमनिभ्यः) नाड़ियों से और (ते) (पाणिभ्याम्) दोनों हाथों से (अङ्गुलिभ्यः) अंगुलियों से और (नखेभ्यः) नखों से (यक्ष्मम्) क्षय रोग को (वि गृहामि) मैं जड़ से उखाड़ देता हूं।

पाठक अनुभव करेंगे कि सम्पूर्ण वर्णन विज्ञान के अनुरूप है।

वेदवाणी

हे तेजस्वरूप! आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥
-ऋ० ३/६२/१०; यजु० ३/३५; साम० उ० ६/३/१०॥

मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं-यह मैं नहीं जानता। किस समय क्या कर्त्तव्य है क्या अकर्त्तव्य, क्या धर्म है क्या अधर्म-यह मैं नहीं जान पाता। सुना है कि बड़े-बड़े ज्ञानी भी बहुत बार इस तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, परन्तु क्या इसका कोई इलाज नहीं है ? हे सवितः देव! हमारे उत्पादक देव! क्या तूने हमें उत्पन्न करके इस अंधेरे संसार में यूं ही छोड़ दिया है ? कोई निर्भ्रान्त (निश्चित) प्रकाश हमारे लिए तुमने नहीं दिया है-यह कैसे हो सकता है ? नहीं, तुम अपने अनन्त प्रकाश के साथ सदा हमारे हो। यदि हम चाहें और यत्न करें तो तुम हमें अपने प्रकाश से आप्लावित कर सकते हो। इसके लिए हम आज से ही यत्न करेंगे और तेरे उस 'भर्ग' (विशुद्ध तेज) को अपने में धारण करने लगेंगे जो वरणीय है, जिसे हर किसी को लेना चाहिए-जिसे प्रत्येक मनुष्य जन्म पाने वाले को अपने अन्दर स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस तेरे वरणीय शुद्ध स्वरूप का हम जितना श्रवण, मनन, निदिध्यासन करेंगे, अर्थात् जितना तेरा कीर्तन सुनेंगे, तेरा विचार करेंगे, तुझमें मन एकाग्र करेंगे, तेरा जप करेंगे, तुझमें अपना प्रेम समर्पित करेंगे उतना ही तेरा शुद्ध स्वरूप हमारे अन्दर धारण होता जाएगा। बस, यह ऊपर से आता हुआ तुम्हारा तेज ही हमारी बुद्धि को और फिर हमारे कर्मों को ठीक दिशा में प्रेरित करता रहेगा। इस शुद्ध स्वरूप के साथ तुम ही मेरे हृदय में बस जाओगे और तुम ही मेरी बुद्धि, मन आदि-सहित इस शरीर के संचालक हो जाओगे। फिर धर्म-अधर्म की उलझन कहां रहेगी। तुम्हारे पवित्र संस्पर्श से इस शरीर की एक-एक चेष्टा में शुद्ध धर्म की ही वर्षा होगी। इसलिए हे प्रभो! हम आज से सदा तुम्हारे शुद्ध तेज को अपने में धारण करने में लगते हैं। एक-एक मानसिक विचार के साथ, एक-एक जप के साथ इस तेज का अपने अन्दर आह्वान करेंगे और इस तरह प्रतिदिन इस तेज को अपने में अधिकाधिक एकत्र करते जाएंगे। निश्चय है कि इस 'भर्ग' की प्राप्ति के साथ-साथ धर्म के निश्चय में पटु होती हुई हमारी बुद्धि एक दिन तुम्हारी सर्वज्ञता के कारण पूर्ण रूप से ठीक मार्ग पर चलने वाली हो जाएगी।

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक उत्सव

श्री गुरू विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर (पंजाब) का 48वां एवं श्री गुरू विरजानन्द गुरूकुल महाविद्यालय करतारपुर का 44 वां वार्षिक महोत्सव 13 अक्तूबर सोमवार से 19 अक्तूबर रविवार 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है जिसके ब्रह्मा आर्य जगत् के उच्चकोटि के सन्यासी तथा गुरूकुल के कुलपति डॉ. स्वामी दिव्यानन्द जी हरिद्वार होंगे। गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों के द्वारा वेद पाठ किया जाएगा। आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् महात्मा चैतन्यमुनि जी के प्रवचन तथा श्री राजेश प्रेमी जी के मधुर भजन होंगे। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जन सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। कृपया उत्सव में पधार कर अनुगृहीत करें।

-प्रधान गुरू विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

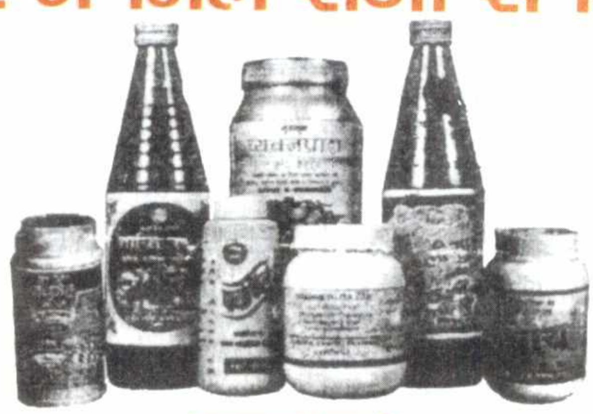

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय :: 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।